International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)

कुटीर उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति का अध्ययन

(छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के दुर्ग व धमधा विकासखण्ड का तुलनात्मक अध्ययन)

श्रीमती वंदना धुर्वे, शोधार्थी (अर्थशास्त्र) हेमचन्द विश्वविद्यालय, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

डॉ. चन्द्रिका नाथवानी, शोध–निर्देशक (सेवानिवृत्त प्राध्यापक, अर्थशास्त्र विभाग)

शास. दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजनांदगाँव (छ.ग.)

Email ID : vandanadhurve112@gmail.com

Article Info
Volume 9, Issue 3
Page Number : 804-810
Publication Issue
May-June-2022
Article History
Accepted : 10 June 2022
Published : 30 June 2022

Abstract :

प्रस्तुत शोध पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के अन्तर्गत दो प्रमुख विकासखण्ड दुर्ग एवं धमधा का चयन किया गया है। इस शोध पत्र में कुटीर उद्योग में संलग्न महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक स्थिति, महिला सशक्तिकरण, आत्म निर्भरता आदि को ज्ञात करने के प्रयास किया गया है। इसमें कुल 400 उत्तरदाताओं (शहरी–ग्रामीण 200–200) को चयनित किया गया है। सभी चयनित उत्तरदाताओं की आयु 18 से 50 वर्ष मध्य है। प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन पद्धति का प्रयोग किया गया है। प्राप्त आँकड़ों एवं तथ्यों के आधार पर प्रमुखतः निष्कर्ष के रूप में अधिकतर उत्तरदाता शिक्षित है, किन्तु व्यावसायिक जानकारी नगण्य है; साथ ही शासन की विभिन्न लाभप्रद योजनाओं की जानकारी निम्न स्तर है, इसके बावजूद महिलाओं द्वारा अपने क्षमता अनुरूप कार्य किये जा रहे है, जिससे आत्म निर्भरता एवं महिला सशक्तिकरण में वृद्धि हो रही है।

की–वर्ड्स : महिला उद्यमी, कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प, सशक्तिकरण, आर्थिक–सामाजिक विकास।

प्रस्तावना –

भारत में कुटीर उद्योग राष्ट्रीय स्तर में आर्थिक व सामाजिक विकास में विशेष स्थान रखते हैं। इस उद्योग को भारत की औद्योगीकरण नीति में शामिल करने पर, MSME में शामिल करने पर बल दिया जा रहा हैं। इस प्रकार कुटीर उद्योग को आगे करने से राज्य एवं देश की अर्थव्यवस्था में सकारात्मकता आएगी। स्वतंत्रता पूर्व भारत में कुटीर उद्योग ही आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत था, उस समय सभी गावों में कोई न कोई कुटीर उद्योग अवश्य होते थे। जैसे– तेल पेरने का कोल्हू, आचार, पापड़, झाड़ू, टोकरियाँ, हस्तशिल्प, मिटटी के कई उत्पाद, हथकरघा, हैंडलूम, खादी इत्यादि; किन्तु स्वतंत्रता पश्चात् शासन ने इस ओर विशेष ध्यान नही दिया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास कुटीर उद्योग के लिए सुखद घटना रही, क्योंकि इससे उत्पादन क्षमता में बेतहाशा वृद्धि हुई।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

कुटीर उद्योग को बढ़ावा देने का उचित प्रयास महिलाओं द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान समय में महिलाएँ सिर्फ रसोई या घर तक सीमित नहीं रहना चाहती, वो भी आत्म निर्भर होना चाहती हैं। कुटीर उद्योग में सभी वर्ग की महिलाएँ चाहे वे शिक्षित–अशिक्षित हो, उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम बनाने में कुटीर उद्योग की बड़ी भूमिका रही है। इसके माध्यम से महिलाओं में आत्म निर्भरता अवश्य आ रही है। अध्ययन क्षेत्र से यह तथ्य उभरकर आया है, कि वहाँ की महिलाएँ मोमबत्ती, अगरबत्ती, पापड़, आचार, बच्चों के खिलौने, विभिन्न प्रकार के मसाले इत्यादि कार्य कुटीर उद्योगों से उत्पादन व पैकिंग कर आसपास के बाजारों में विक्रय कर आमदनी प्राप्त कर रही है। उत्पादों के विक्रय से प्राप्त राशि का प्रयोग कर महिलाएँ स्वयं व परिवार के आर्थिक विकास में योगदान दे रही है। वर्तमान में कुटीर उद्योग एक ग्रामीण अंचल की महिलाओं को जोड़ने का एक उपयुक्त माध्यम बनता जा रहा है, जिससे महिलाओ को अन्यत्र जाने की आवश्यकता भी नही पड़ती हैं और महिलाएँ आपस में संगठित होकर कुटीर उद्योग के रूप छोटे–बड़े कार्यों के माध्यम से उत्पादन प्रारम्भ किए हैं, जैसे – खाने की वस्तुओं के अतिरिक्त दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुओं का उत्पादन भी किया जा रहा है। यहाँ तक की बाजार में वस्तुओं की माँग के अनुरूप त्योहारों को ध्यान में रखते हुए स्थानीय उपलब्ध साधनों से राखियाँ, दिया व रंग–गुलाल इत्यादि का उत्पादन कर बाजार में आपूर्ति की जा रही है, किन्तु कई ऐसे उत्पाद है, जिनके लिए निम्न गुणवत्ता, आधुनिक तकनीकों की कमी, बाजार व बाजार मूल्य तथा जागरूकता में कमी इत्यादि के अभाव से आगे नही बढ़ पा रहे हैं।

वर्तमान परिदृश्य में महिलाएँ न केवल कुटीर उद्योग अपितु हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व स्थापित करती जा रही हैं। महिलाओं के माध्यम से कुटीर उद्योग में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहें हैं। कुटीर उद्योग को बढ़ावा देने तथा महिलाओं को आर्थिक सशक्त बनाने के उद्देश्य व चुनौतियों का सामना करने तथा प्रोत्साहन के लिए देश के विभिन्न राज्यों में प्रमुख योजनाएँ संचालित है –

1. अन्नपूर्णा स्कीम (फूड कैटरिंग)
2. स्त्री शक्ति पैकेट (महिला उद्यमियों को लोन)
3. सेंट कल्याणी स्कीम (उद्यमी महिलायों)
4. मुद्रा योजना स्कीम (छोटी इकाई की महिला उद्यमियों)
5. महिला उत्तम निधि स्कीम (छोटे स्तर की महिलाओं के लिए)
6. देना शक्ति स्कीम (महिलाओं को 20 लाख तक लोन)
7. ओरिएंट महिला विकास योजना स्कीम (बिजनस महिलाओं)
8. भारतीय महिला बैंक बिजनस लोन (पब्लिक बैंकिंग कंपनी महिला उद्यमियों के लिए)

इस प्रकार शासन द्वारा इन सभी प्रकार से महिलाओं को किसी भी उद्योग चाहे वे कुटीर हो अथवा अन्य के लिए आर्थिक सहायता के रूप में लाभ दिए जा रहे है।

कुटीर उद्योग महिलाओं के स्वयं की शक्तियों, योग्यता, हुनर को पहचानने, आर्थिक रूप से समृद्धि करने के अवसर प्रदान कराता है। कोरोनाकाल के दौरान प्रत्येक व्यक्तियों को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। ऐसे में कुटीर उद्योग एक सीमित क्षेत्र में भी स्वयं को संभाले रखा और आर्थिक क्षति को काफी हद तक नियंत्रित किया। कुटीर उद्योग के तहत महिलाओं ने लॉक डाउन में मास्क, सेनेटाइसर बना कर अपनी आर्थिक स्थिति संभाली। यहाँ पर कुटीर उद्योग के तहत आने वाली सूची को प्रस्तुत किये जा रहे है–आगरबत्ती, नमकीन, कपड़ों का कुटीर उद्योग,मसाला, फर्नीचर, बर्तन, मिटटी के बर्तन, पापड,साबुन, चूड़ी बनाना, मेहंदी लगाने का व्यवसाय, दोना पत्तल, आइसक्रीम, आचार आदि।

कुटीर उद्योग में महिलाएँ –

शहरी–ग्रामीण क्षेत्रों महिलाओं के लिए कुटीर उद्योग के रूप में अनेकों कार्य या व्यवसाय है। इससे महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने में सहायता मिलती है जिसके लिए सरकार कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दे रही है। अधिकांश महिलायें घर बैठे व्यवसाय करने का विकल्प खोजती हैं, जिससे वे स्वयं का व्यवसाय कर लाभ अर्जित कर सकें।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. कुटीर उद्योगों में महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. कुटीर उद्योग में संलग्न महिलाओं के आय के स्तर का अध्ययन करना।
3. कुटीर उद्योग में रोजगार के अवसर का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोधपत्र विवरणात्मक तथा मात्रात्मक शोध प्राविधि के अन्तर्गत शामिल है। इसमें सभी उत्तरदाता किसी न किसी प्रकार से कुटीर उद्योगों से जुड़े हुए हैं। चयनित उत्तरदाताओं में सभी महिलायें हैं, जिसकी आयु सीमा 18–50 वर्ष के मध्य है। उत्तरदाता के चयन हेतु दैव निदर्शन के तहत लौटरी पद्धति का प्रयोग करते हुए शहरी ग्रामीण क्षेत्रों से 200–200 उत्तरदाताओं को शामिल किये गए हैं। इसमें उत्तरदाताओं के आय, शैक्षणिक योग्यता, कुटीर उद्योग में रोजगार की सम्भावना, प्राप्त उत्पाद हेतु बाजार की उपलब्धता आदि को शामिल किये गए हैं। यहाँ प्राथमिक आँकड़ों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची एवं अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है तथा द्वितीयक आंकड़ों के लिए सम्बंधित शोध पत्र, पत्र–पत्रिकाएँ, शोध प्रबंध, इन्टरनेट पर उपलब्ध जानकारियों का अध्ययन किया गया है।

चयनित अध्ययन क्षेत्र –

शोध पत्र में चयनित अध्ययन क्षेत्र के रूप में छत्तीसगढ़ के दुर्ग जिले के दो विकासखण्ड दुर्ग (शहरी) एवं धमधा (ग्रामीण) का चयन किया गया है, जो निम्नानुसार हैं –

तालिका क्रमांक 01

जिला–दुर्ग : अध्ययन क्षेत्र में चयनित उत्तरदाता

दुर्ग (शहरी)	संख्या	धमधा (ग्रामीण)	संख्या
दुर्ग	85	पेण्ड्री (गो)	30
भिलाई	75	भांठा कोकड़ी	30
रिसाली	40	कन्हारपुरी	30
		पेंड्रावन	25
		बरहापुर	28
		फुण्डा	25
		परसकोल	32
योग	200	योग	200
कुल योग	200 + 200 = 400		

उत्तरदाताओं की शैक्षणिक योग्यता –

शिक्षा किसी भी व्यक्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक होता है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति की सामाजिक–आर्थिक स्तर में वृद्धि होती है साथ ही शिक्षा व्यक्ति के दैनिक जीवन को सीधा–सीधा

प्रभावित करता है। एक शिक्षित व्यक्ति अपनी सामाजिक–आर्थिक स्थितियों को बेहतर कर सकता है।

तालिका क्रमाँक 02
उत्तरदाताओं की शैक्षणिक स्थिति

क्र.	शैक्षणिक स्थिति	शहरी		ग्रामीण	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	निरक्षर	-	-	13	6.5
2.	प्राथमिक	16	8.0	31	15.5
3.	माध्यमिक	25	12.5	47	23.5
4.	हाई	17	8.5	53	26.5
5.	हायर सेकेंडरी	67	33.5	31	15.5
6.	स्नातक	75	37.5	25	12.5
योग		200	100	200	100

उपर्युक्त तालिका 02 से स्पष्ट है, कि कुटीर उद्योग में संलग्न उत्तरदाताओं में शहरी क्षेत्र में सर्वाधिक 37.5 प्रतिशत उत्तरदाता स्नातक व ग्रामीण क्षेत्र में 26.5 प्रतिशत हाई स्कूल तक शिक्षित है। एवं सबसे कम ग्रामीण क्षेत्र में 6.5 प्रतिश निरक्षर है। प्राथमिक में 8.0 प्रतिशत शहरी एवं 15.5 प्रतिशत ग्रामीण, माध्यमिक शहरी 12.5 प्रतिशत एवं ग्रामीण 23.5 प्रतिशत, हाई स्कूल शहरी 8.5 प्रतिशत्, हायर सेकेण्डरी शहरी 33.5 प्रतिशत एवं ग्रामीण 15.5 प्रतिशत एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्नातक तक शिक्षित उत्तरदाताओं का प्रतिशत 12.5 है।

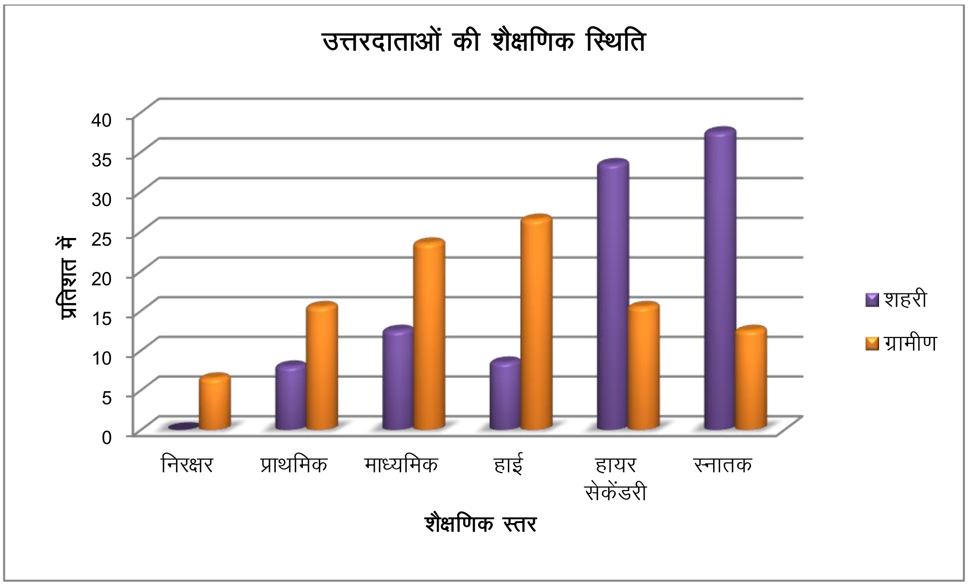

उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात है, कि वर्तमान परिदृश्य में कुटीर उद्योग में संलग्न शहरी उत्तरदाताओं की शिक्षा स्तर ग्रामीण उत्तरदाताओं की अपेक्षा उच्च स्तर की है जिससे उनके कारण शहरी महिलाओं में कुटीर उद्योग सम्बंधित शासकीय योजनाओं की पर्याप्त जानकारियाँ हैं।

कुटीर उद्योग हेतु प्रशिक्षण की जानकारी –

किसी भी कार्य हेतु प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने से कार्य की समझ एवं कार्य में निपुणता आती है। उत्तरदाताओं द्वारा शासन अथवा गैर शासकीय संस्थाओं द्वारा प्रशिक्षण सम्बन्धी जानकारी को ज्ञात करने का प्रयास किये गए हैं –

तालिका क्रमाँक 03

कुटीर उद्योग हेतु प्रशिक्षण की जानकारी का माध्यम

क्र.	जानकारी का माध्यम	शहरी		ग्रामीण	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	जिला रोजगार एवं व्यापार केंद्र	09	4.5	05	2.5
2.	खादी ग्रामोद्योग	07	3.5	-	-
3.	शहरी/ग्रामीण आजीविका केंद्र	69	34.5	55	27.5
4.	स्वयं सहायता समूह	57	28.5	73	36.5
5.	मोबाइल/समाचार पत्र	19	1.5	06	0.3
6.	अन्य	39	19.5	61	30.5
योग		200	100	200	100

उपर्युक्त तालिका 02 में उत्तरदाताओं से कुटीर उद्योग हेतु प्रशिक्षण सम्बन्धी जानकारी के माध्यम को जान्ने का प्रयास किये गए हैं। यहाँ जिला रोजगार एवं व्यापर केंद्र से जानकारी प्राप्त करने वालों में शहरी स्तर के 4.5 प्रतिशत वहीं ग्रामीण स्तर में 2.5 प्रतिशत है। खादी ग्रामोद्योग से प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त करने वाले मात्र 3.5 प्रतिशत शहरी और ग्रामीण स्तर से कोई भी नहीं है। शहरी/ग्रामीण आजीविका केंद्र से शहरी स्तर में 34.5 प्रतिशत जबकि 27.5 प्रतिशत ग्रामीण, मोबाइल अथवा समाचार पत्र से 1.5 प्रतिशत शहरी, 0.3 प्रतिशत ग्रामीण तथा अन्य माध्यम से जानकारी प्राप्त करने में 19.5 प्रतिशत शहरी जबकि 30.5 प्रतिशत ग्रामीण उत्तरदाता शामिल हैं।

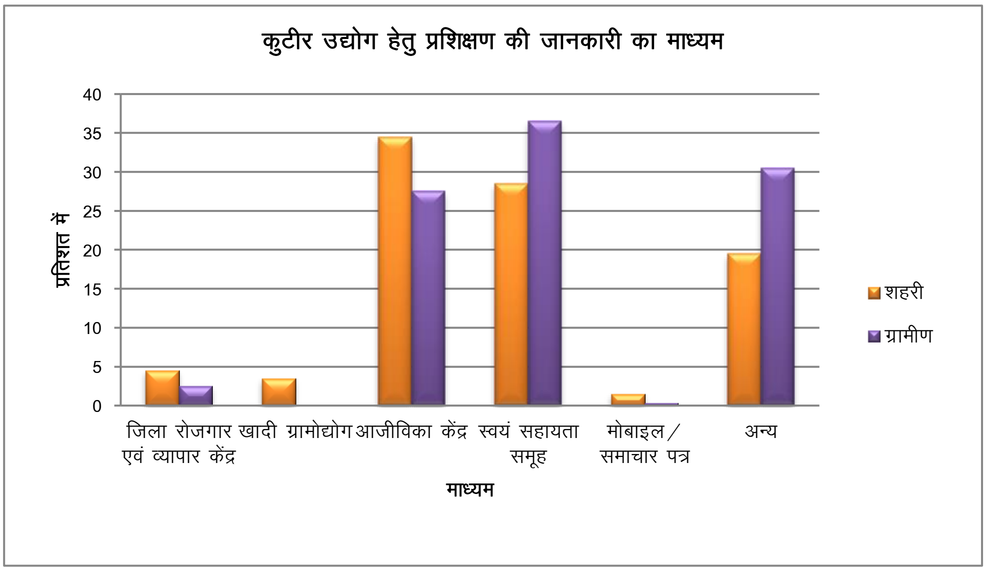

उपर्युक्त विश्लेषण से ज्ञात है की कुटीर उद्योग हेतु प्रशिक्षण सम्बंधित सर्वाधिक जानकरी कुटीर उद्योग हेतु प्रशिक्षण जानकरी शहरी एवं ग्रामीण में शहरी, ग्रामीण आजीविका केंद्र, स्वयं

सहायता समूह एवं अन्य माध्यमों जिसमे किसी मित्र, पडोसी अथवा रिश्तेदारों के द्वारा जानकरी प्राप्त किये हैं।

उत्तरदाताओं की मासिक आय –

अध्ययन क्षेत्र में कुटीर उद्योग में संलग्न उत्तरदाताओं की मासिक आय ज्ञात करने के प्रयास किये गए हैं। जिसका उल्लेख तालिका क्रमॉंक 04 में किया है –

तालिका क्रमांक 04

उत्तरदाताओं की मासिक आय

क्र.	मासिक आय (हजार में)	शहरी		ग्रामीण	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	2–3	20	10.0	31	15.5
2.	3–4	38	19.0	118	59.0
3.	4–5	96	48.0	26	13.0
4.	5–6	29	14.5	15	7.5
5.	6 से अधिक	17	8.5	10	5.0
योग		200	100	200	100

उपर्युक्त तालिका 04 से स्पष्ट है की कुटीर उद्योग में संलग्न महिलाओं में शहरी क्षेत्रों में 10 प्रतिशत उत्तरदाता 2–3 हजार प्रतिमाह कमाते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में 15.5 प्रतिशत हैं। 3–4 हजार रुपये प्रतिमाह कमाने वाले शहरी क्षेत्र 19 प्रतिशत एवं 59 प्रतिशत ग्रामीण ग्रामीण क्षेत्र वहीं 4–5 हजार रुपये प्रतिमाह कमाने वाले शहरी क्षेत्र में 48 प्रतिशत जबकि 13 प्रतिशत ग्रामीण शामिल हैं। 5–6 हजार रूपए प्रतिमाह कमाने वाले शहरों में 14.5 प्रतिशत एवं 7.5 प्रतिशत ग्रामीण शामिल हैं। 6 हजार से अधिक कमाने वाले शहरो में 17 प्रतिशत जबकि ग्ग्रामीण क्षेत्र से मात्र 0.5 प्रतिशत शामिल हैं।

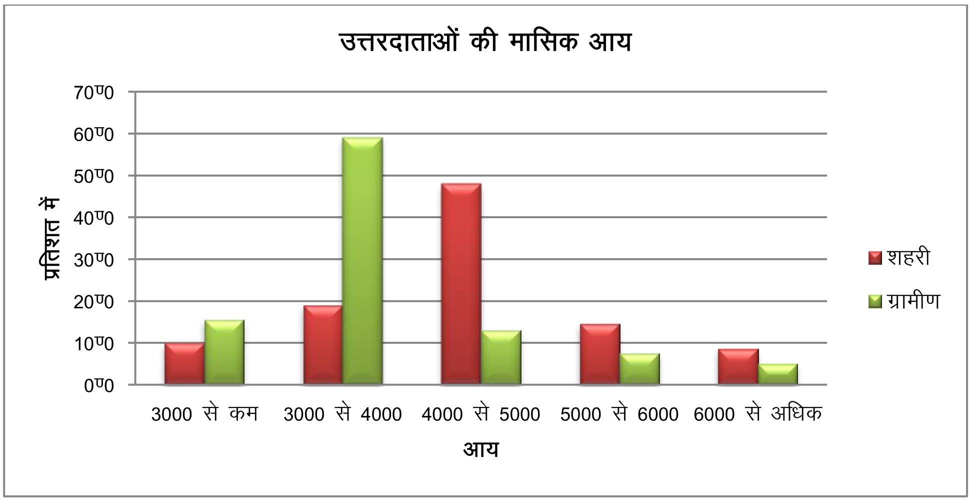

विश्लेषण से ज्ञात है की कुटीर उद्योग से कहीं न कहीं संलग्न महिलाओं को आर्थिक लाभ प्राप्त हो रही है। साथ ही इसका प्रभाव महिला सशक्तिकरण एवं अन्य क्षेत्रों में स्पष्ट दिखाई दे रही है। हालाँकि अध्ययन के अनुसार सर्वाधिक 48 प्रतिशत शहरों से जो 4–5 हजार एवं 59 प्रतिशत

गाँव से जो 3–4 हजार प्रतिमाह प्राप्त करते हैं। वहीं कुछ उद्यमी ऐसी भी है जिनकी प्रतिमाह आय 15–20 हजार भी है। धीरे–धीरे अपने उद्योग के माध्यम से ये उद्यमियो अपने व्यापर में वृद्धि करने का प्रयास कर रहे हैं।

निष्कर्ष –

ग्रामीण–शहरी आर्थिक विकास को प्रगति देने और क्षेत्र विशेष के महत्त्व को समझते हुए हुए कुटीर उद्योग वर्तमान समय में रोजगार का एक उपयुक्त क्षेत्र है। इसमें महिलाओं की सहभागिता का प्रमुख स्थान है जिससे आर्थिक एवं सामाजिक विकास होता है। शहरी क्षेत्र में कुटीर उद्योग सरलता से आगे बढ़ रही है एवं महिलाये अपने परिवार अथवा स्वयं सहयता समूह के माध्यम से कुटीर उद्योग में शामिल हो रही है वही ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योग धीमी विकास रही है। कुटीर उद्योग में पापड, आचार, साबुन, निरमा, खाद्य पदार्थ, बांस की टोकरी एवं अन्य सामान इत्यादि शामिल हैं। हालाँकि कुटीर उद्योग प्राप्त उत्पाद की मार्केटिंग एक प्रमुख समस्या बनी हुई है। कुटीर उद्योग हेतु ऋण एवं सब्सिडी शासन द्वारा प्रदान किये जा रहे हैं। इससे महिलाओं की आर्थिक–सामाजिक स्थिति में सुधार हो रही है तथा रोजगार का प्रमुख साधन बनता जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. कश्यप, जगन्नाथ कुमार, नेहा सिंह, ''लघु एवं कुटीर उद्योग में रोजगार का क्षेत्र'', अक्टूबर 2015.
2. पांडा, ''लघु एवं कुटीर उद्योगों का सशक्तिकरण,'' कुरूक्षेत्र, नवम्बर, 2017.
3. शर्मा, संगीता, उद्यमिता विकास.
4. मॉर्गन स्टेनले, रिसर्च पेपर, द नेक्स्ट इंडिया.
5. भारत में एम.एस.एम.ई. की समस्याएँ, रिसर्च नोट प्रकाशन, 10 मई, 2016.